RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-12
December-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i12.008

दरकते रिश्तों का समाज

डॉ. रंजित एम्

सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, एम्.इ.एस कल्लटी कोलेज, मन्नारक्काट, पलाक्काट, केरल

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 14 December 2020

Keywords
साहित्य परिवार,समाज,रिश्ता , समाजिक संबंधों एवं संस्थाओं की सृष्टि और पुनः सृष्टि.

***Corresponding Author**
Email: drranjithmofficial[at]gmail.com

ABSTRACT

साहित्य और समाज का गहरा संबंध है| साहित्य, समाज रूपी शरीर की आत्मा है| समाज अच्छा हो तो चरित्र अच्छा होता है | परिवार और समाज के अनुरूप ही एक व्यक्ति में समाजिक गुणों और मानविक मूल्यों का विकास होता है| समाजिक संबंधों एवं संस्थाओं की सृष्टि और पुनः सृष्टि की आवश्यकता

महानगरों का जीवन आकर्षक होता है,। भारत में कोलकता, मुम्बई, चेन्नई और दिल्ली जैसे महानगर हैं। आधुनिकता की चमक- धमक सामान्य नगर-कस्बे एवं गाँवों के लोगों को महानगर की ओर खींचता है, पर यहाँ की समस्याएँ उन्हे ऐसे चक्र में उलझाकर रख देते हैं जिससे बाहर निकलना आसान नहीं होता । महानगरों का जीवन जहाँ वरदान है, वहीं अभिशाप भी है। **'अंतहीन यात्रा'** इस संग्रह की पहली कहानी है,इसमें यही विषय है | इसमें सावित्री के घर का चित्रण करते हुये लेखक समकालीन समाज के कई समस्याओं पर प्रकाश डाल रहे है | सावित्री शादी शुदा है| नशा में डूब कर जीनेवाले अपने पति और युवा बेटी के साथ जी रही है| लड़का रेलवे में काम करता है कहकर उसकी शादी की थी | लेकिन वह तो कोंट्राक्ट के काम करता था और साथ में शराबी भी था | *घर में सम्मान पाने ,घरेलु हिंसा से बचने,एवं परिजनों के अपमान से बचने के लिए और आत्म निर्भर होने के लिए सावित्री घर से बाहर निकलती है,*अपनी बेटी की शादी के लिए वह काम करते करते धन जुटाती है | एक दिन ट्यूशन के लिए घर से निकली बेटी वापस नहीं आती | दुसरे दिन पता चलती है , वह अपने ट्यूशन मास्टर के साथ भाग गयी है| *भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति सदियों से दयनीय रही है, उनका हर स्तर पर शोषण और अपमान होता रहा है./ यही इस कहानी का मुख्य विषय है* / नारी और पुरुष परिवार संस्था के दो मूल स्तम्भ हैं। दोनों मानो नदी के दो तट हों जिनके मध्य से परिवार की जीवन की धारा बहती है।माता-पिता और बच्चों के बीच एक अनकही सी दूरी आज बढ़ रही है। सावित्री की बेटी का भाग जाना इसी की और इशारा करता है| लेखक इस कहानी के मद्ध्यम से बता रहे है - "आज के परिवर्तनों, परिस्थितियों में परिवार संस्था को पुनर्गठित करके समाज की इस जीवनदायिनी धारा को अधिक शक्तिशाली और समृद्ध बनाना समय की मांग है|" ।

'चक्रव्यूह' कहानी हमारे बदलते सामाजिक मूल्य और मान्यता पर प्रकाश डालता है| महेश्वरी के माध्यम से कहानीकार समाज में व्याप्त हो रहे असुरक्षा की और इशारा कर रहे है | महेश्वरी कक्षा में पढ़ाते वक्त एक लड़का मोबइल फोन पर ब्लू फिल्म देख रहा था | वह फोन अपने पास रखता है तो वह लडका धमकी देता है | महेश्वरी उसके खिलाफ शिकायत करता है | महेश्वरी को धमकी देने केलिए वह लड़का उसका पीछा करता है| सडक दुर्घटना में उसका मौत हो जाता है | बाद में पता चलता है महेश्वरी की अपनी लडकी भी ब्लू फिल्म देखनेवाली है | हमारे समाज का पुराना आदर्शवादिता और समकालीन यथार्थता का सही अंकन इस कहानी में किया गया है | चक्रव्यूह महाभारत युद्ध में आचार्य द्रोण द्वारा बनाया गया एक तन्त्र था| चक्रव्यूह को देखने पर इसमें अंदर जाने का रास्ता तो नजर आता है ,लेकिन बाहर निकलने का रास्ता नजर नहीं आता| महेश्वरी यहाँ अभिनव अभिमन्यु है,जो चक्रव्यूह के अंदर लड़ते लड़ते पहुँचता है,मगर बाहर आ नहीं पाता | समाज में आदर्श एवं यथार्थ दोनों की अपनी विशेषताएं हैं और उनके बीच ही विसंगतियों का विकास होता है। सामाजिक आदर्श की अपेक्षा यथार्थ की ओर व्यक्ति का झुकाव होता है और वह परंपरागत रूढ़ियों एवं मान्यताओं को तोडने को कटिबद्ध होता है|**'चक्रव्यूह'** कहानी में वैयक्तिकता और सामाजिकता के अंतःसंघर्ष के कारण इच्छाओं और परिस्थितियों का प्रभाव

RRIJM 2015, All Rights Reserved

व्यक्तित्व, नैतिकता, वैचारिकता पर कौनसा असर डाल रहे है ,इसकी चर्चा किया गया है । **'चक्रव्यूह'** भारतीय सांस्कृतिक जीवन के परम्परागत ढाँचे में हस्तक्षेप करती प्रतीत होती है।

पाण्डवों का अज्ञातवास महाभारत कथा का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण और मार्मिक स्थल है । यह एक वर्ष ही उनकी असली परीक्षा का काल था । वनवास काल में मर्द लोग तो सुरक्षित थे | समस्या तो द्रौपदी की थी, जो न केवल सुन्दरी होने के नाते सबके आकर्षण का केंद्र थी बल्कि जिसने कभी सेवा-टहल का काम नहीं किया था। ऐसी स्थिति में उस एक वर्ष को सैरंध्री बनकर काटना द्रौपदी के लिए कैसी अग्नि परीक्षा रही होगी , यह नए और बदले परिवेश में कहानीकार ने दिखाया है

पुराण के इस कथा तन्तु को खुबालकर जी **'सैरंध्री अब नहीं हारेगी'** नामक कहानी में लाया है | उच्च शिक्षा के क्षेत्र में छात्राओं को क्या क्या सहनी पड रही है ,इसका सही अंकन इस कहानी में किया गया है | नारी को एक भोग की चीज़ मात्र समझने की मानसिकता के प्रमाण हमें दैनिक जीवन में लगातार मिलते रहते हैं। भ्रूण से लेकर वृद्धा, महिला किसी भी अवस्था में किसी प्रकार पूर्णत: सुरक्षित नहीं है। **सैरंध्री** के माध्यम से लेखक बता रहे है ,सरकारी योजनाओं की बाढ़, शिक्षा के कथित वैश्विक आयामों को स्पर्श करने, प्रगतिशीलता का ढिंढोरा पीटने के बावजूद महिलाओं के प्रति असम्वेदनशीलता का वातावरण निरन्तर कायम है। पुरुष प्रधान समाज में हर कहीं अपने स्थान तलाशने के लिए विवश नारी का चित्रण यहाँ हुआ है | आधुनिकता एवं पश्चिमी जीवनशैली ने हमारे सामाजिक-नैतिक मूल्यों, आदर्शों, संस्कृति तथा हमारी समृद्धशाली परंपरा को छिन्न-भिन्न कर दिया है। इसका सबसे बड़ा शिकार नारी है |

'दूर दृष्टि' नामक कहानी में बिगड़ रहे परिवार और सासंकृतिक मूल्यों में आ रहे परिवर्तन का चित्रण है| आपसी समझ एवं सामंजस्य दाम्पत्य सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाते है | सुकुमार और सीमा के माध्यम से किस प्रकार सामंजस्य की भावना समकालीन समाज में कम होते है,इसका वर्णन किया गया है | किसी भी रिश्ते की बुनियाद विश्वास और त्याग पर टिकी होती है। लेकिन आज के दौर में रिश्तों से ये दोनों ही आधार लुप्त हो रहे हैं। यह परिवार नाम की संस्था के नैतिक और बुनियादी मूल्यों की जाने-अनजाने अवहेलना का नतीजा है |उत्तर आधुनिक भारत में एक नये समाज का उदय हो रहा है जो अपनी भौतिक, पेशागत और यौन महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए परंपरागत बंधनों को तोड़ रहा है। निजता, व्यक्तिगत पसंद को ज्यादा तरजीह दी जाने लगी है। निजी पसंद और निजता आज का खास मंत्र बन गया है। आज ,बाज़ार तय करता है, हमें कैसा जीना है | बाज़ार बड़ा होने के साथ साथ मानवीय मूल्य छोटा हो जाता है | बहाव के साथ बह कर जीनेवाले कामयाब कह सकते है,लेकिन यह भी भूलना नहीं चाहिए पेड़ से गिरे पत्तियाँ जो बहाव के साथ तैर रही है आगे पूरी तरह पानी में मिल गई है या तो अपना अस्तित्व खो चुके है | जो लोग पागल हाथी की तरह नैतिकता व संस्कारों को भुलकर अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को रौंदते हुए चले जा रहे है,वे यह भूल जाते है कि उनका सफर अस्तित्वविहीनता की ओर है | अस्तित्वविहीन होकर जीना क्या सही है ? कहानीकार यही सवाल उठा रहे है|

मोबाइल फोन हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन कर सदा हमारे साथ रहता है और आज विश्व में सर्वाधिक इस्तेमाल किया जाने वाला उपकरण बन गया है। मोबाइल फोन पहले फोन करने के लिए ही इस्तमाल किया जा रहा था| आज मोबाइल फोन सिर्फ मोबाइल फोन नहीं रहा है उसमें बहुत सारे फीचर आ चुके हैं जिनके जरिए हम अपनी जिंदगी को सुविधाजनक बना सकते हैं | **'काश'** नामक कहानी में मोबाइल फोन कैलाश के सुखी परिवार को कैसे प्रभावित किया है,के बारे में चर्चा कर रहे है| कैलाश की पत्नी लडका प्रशांत को कीमती मोबाइल खरीद देने की प्रार्थना करती है | पहले मना करने पर भी बाद में घर में शान्ति कायम करने के लिए कैलाश कीमती मोबाइल खरीद देते है|प्रशांत मोबइल फोन नीचे रखा ही नहीं| कुछ दिन बाद प्रशांत का एक्सीडेंट होता है और मौत भी| मोबइल में गाना सुनते चले वह ट्रक का हॉर्न नहीं सुन पाया| | लोग सोचेंगे इसमें कहानी लिखने की क्या चीज़ है ? है,क्यों कि हम टेक्नोलजी का गलत इस्तमाल कर रहे है| यह समकालीन समय की ज्वलंत समस्या है ही | खासतौर पर युवा तो तकनीकी की गिरफ्त में पूरी तरह आ चुका है। तकनीक व मशीनों का इस्तेमाल अंधाधुंध तरीके से करते हुए वह यह भी भूलता जा रहा है कि उसके आसपास रिश्तों का एक ताना-बाना है| इन सब के बारे में चिंता करने के लिए पाठक को यह कहानी विवश कर रहे है |

सरकार महिला उत्थान के लिए नई-नई योजनाएं बना रही हैं, कई एनजीओ भी महिलाओं के अधिकारों के लिए अपनी आवाज बुलंद करने लगे हैं | इन सबके बावजूद, नारी समाज में एक नया जोश उठ चुकी है |इसका चित्रण **'रमैया'** नामक कहानी में दर्शनीय है| रमैया ब्यूटीशन कोर्स सीखने के कारण उसकी पती बे वजह उसको मारता है |रमैया का पति महिलाओं को बराबरी का दर्जा देना पसंद नहीं करता , उनकी मानसिकता आज भी पहले जैसे ही है। विवाह के बाद उन्हे ऐसा लगता है कि अब अधिकारिक तौर पर उन्हें अपनी पत्नी के साथ मारपीट करने का लाइसेंस मिल गया है। पूरा रात मारने के बाद सुबह चाय की माँग करनेवाले पति से उसको गुस्सा आती है| अपनी निजी स्वतंत्रता और स्वयं के फैसले

लेने के लिये वह कानूनी कारवाही के लिए तैयार हो जाती है| आज हम ऐसी स्थिति में पहुँच गए हैं, जहां तकनीक ने एक ऐसी भौतिक जगह तैयार कर दी है, जिसमें महिला व पुरुष बराबरी से भागीदारी कर सकते हैं। फिर भी कहीं कहीं इस प्रकार की घटनाएँ हो रहे है| यह गलत बात है|न नारी दोयम है और न पुरुष प्रथम। दोनो की भिन्न गुण हैं और भिन्न भूमिका भी | रमैया जैसे ही औरत को खुद आगे बढ़कर समता की लड़ाई की कमान को अपने हाथ में लेना होगा, तभी मुक्ति संभव है। एक राष्ट्र और समाज के रूप में हमें यह सुनिश्चित करना है कि रमैया जैसे महिलाओं को, जीवन में आगे बढ़ने के सभी अधिकार और क्षमताएं सुलभ हों।नारी को अपने ढंग से जीने का, तथा अपनी क्षमताओं का पूरा उपयोग करने का सुरक्षित वातावरण तथा अवसर मिलना ही चाहिए।

महर्षि वाल्मीकि का पहला नाम रत्नाकर था। लूट-पाट और हत्याएँ इनकी आजीविका का साधन बन गया। इन्हें जो भी मार्ग में मिल जाता, ये उसकी सम्पत्ति लूट लिया करते थे। एक दिन इनकी मुलाक़ात देवर्षि नारद से हुई। इन्होंने नारद जी से कहा कि 'तुम्हारे पास जो कुछ है, उसे निकालकर रख दो! नहीं तो जीवन से हाथ धोना पड़ेगा।' देवर्षि नारद ने कहा- 'मेरे पास इस वीणा और वस्त्र के अतिरिक्त है ही क्या? तुम लेना चाहो तो इन्हें ले सकते हो, लेकिन तुम यह क्रूर कर्म करके भयंकर पाप क्यों करते हो? देवर्षि की कोमल वाणी सुनकर वाल्मीकि का कठोर हृदय कुछ द्रवित हुआ। इन्होंने कहा- भगवान्! मेरी आजीविका का यही साधन है। इसके द्वारा मैं अपने परिवार का भरण-पोषण करता हूँ।' देवर्षि बोले- 'तुम जाकर पहले अपने परिवार वालों से पूछकर आओ कि वे तुम्हारे द्वारा केवल भरण-पोषण के अधिकारी हैं या तुम्हारे पाप-कर्मों में भी हिस्सा बटायेंगे। तुम्हारे लौटने तक हम यही होंगे । यदि तुम्हें विश्वास न हो तो मुझे इस पेड़ से बाँध दो।' देवर्षि को पेड़ से बाँध कर ये अपने घर गये। इन्होंने बारी-बारी से अपने कुटुम्बियों से पूछा कि 'तुम लोग मेरे पापों में भी हिस्सा लोगे या मुझ से केवल भरण-पोषण ही चाहते हो।' सभी ने एक स्वर में कहा कि 'हमारा भरण-पोषण तुम्हारा कर्तव्य है। तुम कैसे धन लाते हो, यह तुम्हारे सोचने का विषय है। हम तुम्हारे पापों के हिस्सेदार नहीं बनेंगे।' पुराण के इस कथा तन्तु को कहानीकार ने नए ढंग से प्रस्तुत किया है | “बीहड़ जंगल से गुजरनेवाले यात्रियों को स्टेनगन दिखाकर वाल्मीकि टोल टैक्स के साथ साथ सब कुछ लूट रहा था”| “**वाल्मीकि नव कथा**” कहानी की शुरुआत इस प्रकार है| हमारे समाज में आज जीना बहुत दुष्कर हो चुका है| टैक्स के नाम से लोगों को अधिकारी वर्ग चूस रहे है|इस पर करारा व्यंग्य करते हुए कहानी आगे बढ़ता है| पौराणिक कहानी के अनुसार नारद आते है | इस बार वाल्मीकि के परिवार उसके पाप कर्मों का हिस्सा वहन करने के लिए तैयार हो जाते है| अधिक धन लोग कैसे बाँट रहे है,यह भी व्यंग्य रूप में इस कहानी में दिखाया गया है | चोरी,भद्देपन सब आज अच्छा काम हो चुका है| शरीफ होकर जीना मूर्खता भी|

‘**चलता पुर्जा**’ कहानी में चैतन्य के ज़रिए से कहानीकार समाज की जिस भयानक तस्वीर को चित्रित कर रहा है; वह आधुनिकता, सुरक्षा तथा विकास जैसे शब्दों को सवालों के घेरे में लाती है। दरअसल ‘कानून व्यवस्था’ शब्द कहने को कुछ तथा देखने में कुछ है। चैतन्य का रास्ता भटकना,किन्नरों के इलाके में फँसना,जान बचा कर भागते वक्त पुलीस के गाड़ी में जाना,गाडी का माहौल और पुलीस के हाथ से कैसे बच गए यह सब हमारे देश का सही चित्र खींच रहे है | भरत देश के अंतर सभी लोग अपने अपने देश की रचना कर वहाँ अपना कानून चलाते है| देश को वहाँ मान्यता नहीं है | उनको यही लगता है कि वह कानून की पकड़ में नहीं आएंगे, यदि पकड़े भी गए तो किसी तरह निकल जाएंगे। कुछ लोगों के लिए देश तरक्की कर रहा है पर समाज पतन की ओर जा रहा है। समाज का सीधा-सच्चा नागरिक पीड़ित, परेशान और उत्पीड़ित हो रहा है तथा बदमाश, चोर, उचक्के व खूंखार अपराधी बेखौफ होकर समाज के लोगों को बेधड़क अपना निशाना बना रहे हैं। विकास का अर्थ भौतिक तरक्की नहीं बल्कि मुनष्य के निर्भय होकर जिंदगी गुजारनें में है।

‘बिछावन’ नामक कहानी शिक्षा जगत से संबंधित है| आजकल किसी विषय या समस्या की चर्चा के लिए समर्पित एक प्रतिनिधि सम्मेलन को नामित करने के लिए उपयोग किया जाता है जिसमें कई देशों के प्रतिनिधि हिस्सा लेते हैं ,जो संगोष्टी नाम से जाना जाता है | कई विषयों पर संगोष्टीयों का आयोजन हो रहे है| कई विशेषज्ञ अपना विचार प्रस्तुत करते है|प्रतिभागी वाह-वाह करते है,भोजन और चाय के बाद प्रमाण पत्र लेकर सब वापस जाते है|दुःख की बात यह है कि खाना,टी.ए अपनाना और प्रमाण पत्र जुटाने के अतिरिक्त ज्ञान का आदान प्रदान बहुत कम ही हो रहे है| इसका चित्रण कहानीकार ने किया है| सब अपने आप को मिल रही रकम को ध्यान देते है,दूसरे कुछ भी नहीं|

‘संक्रांति’ नामक कहानी में सुदेश के माध्यम से निजी अस्पताल कैसे लोगों का घाल उठा रहे है-के बारे में विचार किया गया है | अस्पताल में आज जान बचाने का काम नहीं जान लेने का काम ही ज्यादा चलता है | जितने बड़े अस्पताल उतनी ही बड़ी लूट| परिवार का केंद्र बिंदु मां ही होती है | वही माँ जब बेहोश हो जाती है, तब उसे सुदेश और बहिन अस्पताल पहुँचाना चाहते है| उसी बीच,गलत फहमी के

कारण सुदेश को गिरफ्त करने के लिए पुलिस आ जाते है | माँ की हालत देख कर वे उसे अस्पताल पहुँचाते है| फिर अस्पताल में हो रहे घटनाएँ,माँ का अस्पताल से बचना आदि हमारे समाज में हो रहे घटनाओं के बारे में चिंता करने के लिए हमें विवश कर रहे है| देश प्रगति की राह पर चल रहा है वहां महिलाओं की हालत बद से बदतर हो रही है। उनकी स्थिति में कोई सुधार नहीं है। पहले उन्हें घर की सामग्री समझा जाता था, और अब उन्हें अपने मनोरंजन के लिए खेलकर फैंक देने वाला खिलौना। नारी को एक माल के रूप में देखने की प्रथा समाज में बढ़ चुका है | इसके कारण नारी समाज में सुरक्षित नहीं है| आपस का रिश्ता अब कम हो रही है| पड़ोसी हमें दुश्मन लग रहे है| इस लिए हम किसी से भी मिलने के लिए तैयार नहीं है|

बीते कुछ दशकों में दुनिया ने काफ़ी तरक़्क़ी कर ली है | इस कहानी संग्रह के लम्बी कहानी **'विखंडित राग'** में ,महेश्वर के माध्यम से दफ्तर और परिवार को एक साथ चलाने की कोशिश करनेवाले लोगों के बारे में बता रहे है|महेश्वर भारत सरकार के पहले दर्जे के गज़टड अफसर है| अच्छी तरह काम करनेवाले है| एक कौड़ा भी अपनाने की इच्छा न रहनेवाला है| यह निदेशक और अन्य लोगों को (जो सरकारी पैसा अपनाने के लिए हिचकता नहीं है) समस्या बन जाते है|वे उन पर तनाव बढाते रहते है| यहाँ सरकारी दफ्तरों का एक अलग चेहरा लेखक दिखा रहा है | जब कोई व्यक्ति न्याय व्यवस्था के मान्य नियमों के विरूद्ध जाकर अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए गलत आचरण करने लगता है तो वह व्यक्ति भ्रष्टाचारी कहलाता है। भ्रष्टाचार ने तो भारत की व्यवस्था को बुरी तरह क्षतिग्रस्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। प्रत्येक अफसर अपना एक दल बना रखता है और उस दल के सहारे औरों को मानसिक और शरीरिक रूप से तंग करते है| उसी बीच प्रीतो नामक कर्मचारिणी औरत को खतरे से बचाने के कारण समस्या और जटिल बन जाता है| महेश्वर की पत्नी वहाँ के एक दूकानदार के साथ भाग जाती है|बिटिया अपने बाय फ्रंड के साथ लिव इन रिलेशन शुरू करती है| बाद में पता चलता है उस दोस्त की पत्नी और बच्चे है| इस प्रकार दफ्तर और परिवार के तनाव महेश्वर पर पड़ते रहते है| वह चरम सीमा पर तब पहुंचते है जब महेश्वर की पत्नी को वेश्यालय में मिलती है| यहाँ कहानी खत्म होती है |

बदलते वक्त ने महिलाओं को आर्थिक, शैक्षिक और सामाजिक रूप से सशक्त किया है |सिर्फ शारीरिक तौर पर नहीं बल्कि शब्दों से भी महिलाओं का शोषण किया जा रहा है। घर हो या बाहर कहीं भी वह सुरक्षित नहीं है।|इस कहानी के प्रीतो इसका मिसाल है| घरेलू महिलाओं की तुलना में कामकाजी महिलाओं पर काम का बोझ ज्यादा है. इन महिलाओं को अपने कार्यक्षेत्र और घर, दोनों को संभालने के लिए ज्यादा मेहनत करनी पड़ रही है|घर और ऑफिस के बीच सामंजस्य बिठाने में हुई दिक्कत के बाद प्रीतो नौकरी छोड़ने के लिए तैयार हो जाती है | कामकाजी महिलाओं को समाज में क्या क्या भोगना पड रहा है,इसका जीता जागता चित्रण इस कहानी में देख पायेंगे|

'विखंडित राग' कहानी संग्रह के प्रत्येक कहानी की कथावस्तु चयन,पात्रों का निर्माण,उनके संवाद आदि पर लेखक ने विशेष ध्यान दिया है| हमारे समाज में घटित हो रहे प्रत्येक घटनाओं के प्रति लेखक की प्रतिक्रिया व्यक्त करने में सक्षम पात्रों का चयन यहाँ विशेष ध्यान देने योग्य बात है| पौराणिक पात्रों का नया परिप्रेक्ष्य में चित्रित करना आसान काम नहीं है |उसमें लेखक को पूर्णतः सफलता मिला है|कभी कभी अपने को पात्र के रूप में और कभी प्रेक्षक के रूप में चित्रित करके लेखक पाठकों को समझा रहे है - प्रत्येक मानव में समाज के लिए उपयोगी बनने का भाव होना चाहिए। हमें इस तथ्य का भली भांति बोध होना चाहिए कि सुखी होने का भाव है-दूसरों को सुखी बनाना। इसी के आधार पर समाजिक संबंधों एवं संस्थाओं की सृष्टि और पुनः सृष्टि होना चाहिए |

References

[1]. उमाकांत खुबालकर, विखंडित राग, भावना प्रकाशन दिल्ली प्रकाशन वर्ष २०१७

RRIJM 2015, All Rights Reserved